अनुभव के बोल

– अण्णा हज़ारे

मेरा जन्म **15 जून** 1938 को अहमदनगर शहर के पास भिंगार ग्राम में हुआ। वैसे हमारा परिवार राळेगण सिद्धि तहसील पारनेर ज़िला अहमदनगर से था लेकिन मेरे दादाजी भिंगार छावनी में फ़ौज में जमादार थे इस लिए हमारा परिवार उस समय भिंगार ही में रहा करता था। मेरा जन्म भी वहीं पर हुआ। घर में पहला बच्चा होने के नाते बचपन खूब लाड-दुलार में बीता।

भिंगार की कैखुसरौ इरानी ब्रदर्स स्कूल में कक्षा चौथी तक मेरी पढाई हुई। आगे की पढाई के लिए मेरे मामाजी मुझे मुम्बई ले गए। बचपन में मेरी माताजी ने मुझे अच्छे संस्कार दिए। मेरी माँ भले ही पढी लिखी नहीं थी मगर ज़िन्दगी को किस तरह जीना चाहिए यह वो भली भाँति जानती थी। और इन्हीं संस्कारों की घुट्टी मुझे उन्होंने पिलाई। झूठ नहीं बोलना, चोरी नहीं करना, मक्कारी बुरी बात है, सबका भला करें, किसीका भला न भी कर पाओ तो कम से कम बुरा तो न करें, आदि आदि माँ की नसीहतें मेरे दिल में बचपन से जा बैठी हैं। बचपन के संस्कार आदमी के पूरे जीवन को प्रभावित करते हैं।

स्व. माताजी लक्ष्मीबाई हज़ारे

सन 1962 में जब मैं मुम्बई में रहता था, चीन ने भारत पर अचानक हमला किया। हमारे देश की विदेश नीति सब के साथ मैत्री की थी। हम भौंचक्के से रह गए। किसी दुश्मन के साथ लडने के लिए हम किसी भी तरह तैयार न थे। अचानक चीन का आक्रमण होने के कारण हमारी सेना की बडी मात्रा में जीवित हानि हुई, और देश की सम्पत्ति का भी भारी नुकसान हुआ। इन स्थितियों में सरकार ने युवाओं को आह्वान किया कि सीमा सुरक्षा हेतु स्थल सेना, जल सेना और वायु सेना में दाखिल हों। मेरी माता ने राष्ट्र प्रेम के संस्कार मुझपर किये ही थे। सन 1963 में मैं फ़ौज में भर्ती हुआ। सेना में भर्ती होने के बाद मन में बार बार एक सवाल उठता रहा कि भगवान ने दुनिया की ये क्या सूरत बना रखी है कि हर कोई खाली हाथ जनमता है और मरते दम भी खाली हाथ ही जाता है। फिर भी ज़िन्दगी भर ''मैं- मेरा...'' करते करते दौड-भाग में लगा रहता है। किस लिए जीता है, जब कि हाथ में कुछ भी नहीं आता? सिकन्दर महान ने पूरी दुनिया पर राज किया, पर एक दिन वो भी खाली हाथ गया। और जाते समय सबको बताता गया कि भले ही मैंने दुनिया पर राज किया हो, जा तो खाली हाथ रहा हूं, कुछ भी

'देहात में चलो'
महात्मा गांधी

साथ लिए नहीं जा रहा हूं! मेरे सवाल का जवाब मुझे कहीं नहीं मिल रहा था। मैं कईयों से सवाल पूछता रहा कि क्यों जीता है इन्सान? कोई माक़ूल जवाब नहीं दे पाया। फिर बडे सोच-विचार के बाद मैंने तय किया कि इस अर्थहीन जीवन का अन्त ही कर दें। क्यों जीते रहें? जब पता है कि खाली हाथ जाना है तो जीएं तो क्यों जीएं और किस लिए जीएं? क्यों न आज ही- अब ही इसे ख़त्म कर दें? वैसे मेरे जीवन में कोई मुसीबतें नहीं थीं, न ही कोई कठिनाइयों से गुज़रना पड रहा था। बस, जीना बेमतलब लग रहा था इस लिए ख़ुदकुशी करने की ठान बैठा था।

क़िस्मत की लीला देखिए। दिल्ली रेल्वे स्टेशन के बुक स्टॉल पर एक किताब पर स्वामी विवेकानन्द जी का चित्र बडा अच्छा लगा इस लिए वह किताब मैंने खरीद ली। पढने लगा और यूं लगा कि जीवन की डोर ही हाथ लग गई। **स्वामी जी की और भी किताबें पढता गया। स्वामी विवेकानन्द जी के सभी विचारों को समझ पाना आसान नहीं है और मुझ जैसे कम पढे इन्सान के लिए तो मानो असम्भव ही है।** पर स्वामी जी के विचारों से एक बात मैं यह समझ पाया कि हर आदमी जो जन्म होने से मरने तक ''मैं-मेरा...'' करते हुए दौड रहा है, उसकी वजह यह है कि उसे आनन्द की तलाश है। थोडी देर का आनन्द नहीं, अखण्ड आनन्द की तलाश में आदमी भटक रहा है। एक तरफ आनन्द की खोज में भटक रहा आदमी है। दूसरी तरफ कुछ लोग एयर कण्डीशण्ड मकान में रहते हैं लेकिन चूं कि नीन्द नहीं आती इस लिए रात को नीन्द की गोलियाँ खा कर सोते हैं। स्वामी विवेकानन्द जी कहते हैं, अखण्ड आनन्द बाहर से नहीं मिलने वाला है, वह भीतर से, अपने अन्तर में से मिलेगा। दीन-दुखी-पीडित इन्सानों की सेवा करना ही ईश्वर की पूजा-आराधना है। ऐसी पूजा करने से आदमी को अखण्ड आनन्द मिल सकता है। लेकिन वह सेवा निष्काम भाव से होनी चाहिए। कुछ पाने के लिए किए गए सेवाकार्य से वह शाश्वत आनन्द नहीं मिलने वाला। आनन्द मिलेगा ज़रूर लेकिन कुछ समय के लिए। शाश्वत आनन्द नहीं मिलेगा। मन्दिर में कई लोग रोज़ाना पूजा-पाठ करते हैं। अच्छी बात है। मैं भी तो मन्दिर में रहता हूं। श्री क्षेत्र आळंदी में सन्त ज्ञानेश्वर महाराज की समाधि की तुलसी माला गले में पहना हूं। लेकिन मैं केवल माला जपते नहीं बैठता। जाप करता हूं साथ ही बिना फल की अपेक्षा रखे, सफलता या नाकामी की यश-अपयश की चिन्ता परवाह न करते हुए निष्काम भाव से किया हुआ मेरा हर एक कर्म ही मेरा अखण्ड जाप है। कई बार यूं भी देखा जाता है कि एक तरफ मन्दिर में पूजा-अर्चा में लोग निमग्न हैं, तो

स्वामी विवेकानन्द

दूसरी तरफ मन ही मन यह सोचते रहते हैं कि पडौसी की ज़मीन को कैसी हथियाई जाए। या कि किसी को उधार दी हुई रकम का एक साल का ब्याज आना बाक़ी है। ऐसी सोच से, लालच से की हुई पूजा आपको वह आनन्द नहीं दिलवा सकती। ईश्वर को आपकी भाव-भक्ति चाहिए। कुछ लोग अपने देह-भाव को- अस्तित्व को भुला कर भक्ति भाव से पूजा में मग्न हो जाते हैं। वही असली पूजा है।

सन 1965 के युद्ध में खेमकरण में हुआ हवाई हमला

स्वामी विवेकानन्द जी के विचार और महात्मा गांधी जी की सोच 'देहातों में चलो' इन बातों का मेरे जीवन पर जो प्रभाव हुआ उसके फलस्वरूप मैंने 25 साल की भरी जवानी में निश्चय कर लिया कि मेरा सम्पूर्ण जीवन अब मैं गाँव की, समाज की, देश की सेवा निष्काम भाव से करने में लगाऊंगा। सेवा यानि कि बिना फल की अपेक्षा रखते हुए निष्काम भाव से किया हुआ कर्म। मैंने मेरे जीवन के लिए मेरा गन्तव्य सुनिश्चित कर लिया-**"कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन"।**

सेना में भर्ती हुए दो ही साल हुए थे कि सन 1965 में पाकिस्तान सीमा पर दुश्मन ने हम पर हवाई हमला किया। इस हमले में मेरे कई संगी-साथी शहीद हो गए। जो ट्रक मैं चला रहा था उसपर 25-30 बुलेट दागी गई थीं। गोलियों ने आगे के टायर बर्स्ट कर दिए थे। सामने की काँच पर तीन गोलियाँ लगी थीं। पर मैं बालोबाल बच गया। चारों तरफ खून ही खून था। मैं सोचने को मजबूर हुआ कि इतनी गोलियाँ चलीं, मेरे सभी संगी-साथी शहीद हो गए, अकेला मैं बच गया, ज़रूर ईश्वर मुझसे कुछ काम करवाना चाहता है!

मैं फ़ौजी

स्वामी विवेकानन्द जी, महात्मा गांधी जी की किताबें मैंने पढी थीं। मेरे विचारों पर उनका गहरा असर हुआ था। इस कारण जब भारत-पाकिस्तान सीमा पर यह घटना घटी, वहीं पर मेरा फैसला हो चुका। जब मेरे सभी साथी शहीद हुए और मैं बच गया तो यह मेरा नया जन्म है, पुनर्जन्म है। और यह नया जीवन सिर्फ़ और सिर्फ़ गाँव, समाज और देश की सेवा को समर्पित होगा।

मेरे घर की माली हालत कोई खास अच्छी नहीं थी। ऐसे में गाँव की, समाज की सेवा करने के लिए फ़ौज की चाकरी छोड कर चला आऊं तो या तो घर के लोगों पर या किन्हीं औरों पर बोझ बन कर रह जाऊंगा। 'भूखे भजन न होई गोपाला!' बिना खाये-पीये

कैसी सेवा कर पाऊंगा? कुछ प्रबन्ध तो होना चाहिये जीते रहने के लिए। सेना में मात्र दो वर्ष की सेवा हो पाई थी। इन स्थितियों में गाँव, समाज, देश की सेवा के लिए फ़ौज की नौकरी को छोड देना मुश्किल लग रहा था। सोच-विचार कर तय किया कि सेना में कम से कम 15 साल सेवा दें, तब जा के पेन्शन मिल पाएगी। फिर किसी पर बोझ बने रहने की नौबत नहीं आएगी। साथ ही यह भी तय कर लिया कि शादी नहीं करूंगा। शादी कर बैठता तो घर-गृहस्थी के कामों में ही उलझ जाता। फिर कहाँ की सेवा? इस अन्देशे से अविवाहित रहने की बात मैंने ठान ली। जब तक जीऊं मैं गाँव, समाज, देश के लिए ही जीऊंगा और मरना भी तो गाँव, समाज, देश की सेवा करते हुए ही मरूंगा। यह मेरा फ़ैसला पाकिस्तान की सीमा पर खेमकरण क्षेत्र में मेरी उम्र के 25 वें वर्ष में हुआ और आज उम्र के 82 वें वर्ष में भी मैं इस फ़ैसले पर अडिग हूं। यह ईश्वर की मुझ पर महती कृपा है ऐसा मैं मानता हूं। बिना शादी किए समाज में काम करते रहना आसान नहीं है, लेकिन ईश्वर की कृपा से 82 साल की जीवनी मैं इस तरह बिता पाया कि चरित्र पर कलंक का एक धब्बा भी नहीं लगने दिया। इस लिए मन को क़ाबू में रखने की ताक़त ईश्वर से मिलती रही।

बर्फ़ीले प्रदेश में

फ़ौज की सेवा में रहते हुए पंजाब, हिमाचल प्रदेश, शिमला के आगे चीन के सीमावर्ती टापरी, शुगर सेक्टर तथा पूर्वी क्षेत्र में रहने का मौक़ा मिला। सिक्किम, भूटान, असम, मीज़ोरम, तेजपुर, धवांग, तवांग, पश्चिम बंगाल, कश्मीर में भी रहा। सेना दल की सेवा के 12 वर्षों में से 6 वर्ष 14 हजार फीट की ऊंचाई पर बर्फ़ीले प्रदेश में बीते। हिमालय के पश्चिम बंगाल से ले कर असम, नगालैण्ड, सिक्किम, भूटान, हिमाचल, उत्तराखण्ड जैसे इलाक़ों की भौगोलिक, सामाजिक परिस्थितियों से अवगत हुआ। मालूमात बढती गई। हिमालय में कई स्थानों पर बर्फ़ के कारण डीज़ल जम जाती थी। ऐसे में टंकी के नीचे से डीज़ल गर्म करनी पडती थी। डीज़ल पिघलने के बाद ढलान पर 2/3 कि. मी. गीयर में चलाने पर इंजन शुरु हो पाता। नए नए अनुभव हुए। बर्फ़ में गाडी चलते समय फिसल न जाए इस लिए टायरों को नॉन-स्किड चेन लगानी पडती थी। फ़ौज के कानून अलग

ट्रक पर बरसी गोलियाँ

फ़ौज में सेवारत

होते हैं। जवानों की हित रक्षा के लिए कई बार मैंने अपने वरिष्ठों से संघर्ष किया। कम्पनी दरबार, बटैलियन दरबार में मैं हमेशा जवानों की हित रक्षा के सवालात खडे करता। शायद इसी कारण से सिपाही से ले कर बडे अफ़सर तक मुझे 'शास्त्री जी' नाम से जानने लगे। पहले के ज़माने में राजा-महाराजाओं के दरबार लगा करते थे। जिसे कोई शिकायत होती थी वह इस दरबार में गुहार लगा सकता था और वहीं उसका समाधान भी हुआ करता था। सेना में यह रिवाज़ अभी भी बरक़रार है। जवानों की हित रक्षा में पूछे गए मेरे सवाल कभी बडे अफ़सरों पर अंगुलीनिर्देश कर देते थे। ऐसे में फिर मेरा तबादला हिमालय के दुर्गम इलाक़ों में हो जाता था। मैं तो कहीं पर भी जाने के लिए हमेशा तैयार था। देश की सेवा करने का व्रत जो मैंने ठान लिया था। मीज़ोरम में जानलेवा हमले में से मैं बालोबाल बच गया। फ़ौज में बिताये 12 साल एक बेहद कठिन सफ़र था जो शब्दों में बयाँ करना मुश्किल है। इन 12 सालों के अनुभवों पर लिखना चाहूं तो अलग किताब ही बन जाए। पर एक बात मैं जान गया कि यदि कोई जवान अपने जीवन का गंतव्य सुनिश्चित कर लें तो हर मुश्किल आसान बन जाती है।

1965 की खेमकरण जंग ने मेरे जीवन में बडा परिवर्तन लाया। हवाई हमले में सिवा मेरे, मेरे सभी साथी शहीद हुए, और ईश्वर ने मुझे बचा लिया इसमें ज़रूर कुछ ईश्वरी योजना होगी ऐसी सोच मुझमें पैदा हुई। इस सोच के कारण जीवन को नई दिशा मिली, नई

मंज़िल दिखाई दी। जीवन में मात्र सेवा का- निष्काम कर्म करने का व्रत धारण किया। स्वामी विवेकानन्द जी कहते हैं कि हर आदमी अपने जीवन में हर दिन कोई लक्ष्य निर्धारित करता है। एक लक्ष्य हासिल होने पर दूसरा निर्धारित करता है। दूसरे के बाद तीसरा। रोज़मर्रा के ये लक्ष्य कभी ख़त्म नहीं होते, बस बदलते मात्र रहते हैं। इसी कारण हमें जीवन की सही मंज़िल नहीं दीख पाती। दूसरों को देख कर हम अपने जीवन का लक्ष्य निर्धारित करते हैं। और यही वजह है कि उस लक्ष्य में 'मैं-मेरा...' यही प्रधान सोच होती है। कहीं पर 'मैं' के बदले 'हम' हो सकता है, मगर गाँव, समाज, देश के बारे में नहीं सोचा जाता।

यही वजह है कि जब रोज़मर्रा के लक्ष्य की प्राप्ति करने में बाधा आ जाए, विरोध या निन्दा हो जाए, तो मन मसोस कर रह जाता है। लक्ष्य को बदल देते हैं। कभी कभार लक्ष्य छोड भी देते हैं। रुक जाते हैं। क्यों कि यह तो रोज़मर्रा वाला लक्ष्य है। ऐसे समय में यह ग़ौर करना ज़रूरी है कि मेरी ज़िन्दगी का असली मक़सद क्या है? मेरी असली

मंज़िल कहाँ है? हर कोई खाली हाथ आया है और खाली हाथ जाना है। फिर भी 'मैं-मेरा..' का पीछा क्यों नहीं छूटता। फिर जीते किस लिए हैं? सोचना ज़रूरी है। इसी लिए जब **कार्यकर्ता अपने जीवन का लक्ष्य निर्धारित कर लेता है तब वह अपनी मृत्यु पर जीत पा लेता है। मृत्यु पर विजय पाने वाला आदमी न मुसीबतों से डरता है न ही विरोध से पस्त होता है।** जिसे मरने का डर नहीं वो अपनी राह छोडता नहीं, हारता नहीं, मुसीबतों का सामना करता हुआ **चलते चलता है।** स्वामी विवेकानन्द जी की यही बात मेरे दिल में उतर गई कि अपने संपूर्ण जीवन का लक्ष्य निर्धारित करो।

महात्मा गांधी और स्वामी विवेकानन्द के विचारों के अनुसार मैंने अपना जीवन लक्ष्य 25 साल की उम्र में निर्धारित किया। जीवन भर निष्काम सेवा करते रहना यही मेरा लक्ष्य बना। अपने गाँव की, समाज की, देश की सेवा करना। पिछले 50 वर्ष इसी मार्ग पर आगे बढते समय कभी विरोध हुआ, कभी आलोचना हुई, कभी अपमान भी होते रहे किन्तु जीवन की राह मैंने ख़ुद निर्धारित की थी इसी कारण रुका नहीं, बढता चला। स्वामी विवेकानन्द जी कहते हैं- जब जीवन का लक्ष्य निर्धारित होगा तो मंज़िल की राह भी दिखाई देगी। इस राह पर चलते विरोध होगा, निन्दा होगी, अपमान होंगे, शारीरिक और मानसिक अत्याचार भी होंगे, पर रुक जाना नहीं है, चलते चलो, बढते रहो। मृत्यु का सामना करना पडे तो भी चलते चलो। जीवन का लक्ष्य निर्धारित कर के चलते चलो तो राह ख़ुद मंज़िल तक पहुँचा देती है।

जब मैंने गाँव, समाज और देश की सेवा करने का लक्ष्य निर्धारित किया तो मुझे सेवा की राह दिखाई दी। गाँव के हालात कुछ ठीक नहीं थे। मुझे रु. 15,000 माहवार पेंशन के अलावा कोई आमदनी नहीं थी। सेवा की राह पर चलते हुए कई बाधाओं का सामना करना पडा। गाँव की जनता का काम करने के लिए मुझे कई बार मुम्बई जाना पडता था। पैसे नहीं होने पर रात होटल में नहीं रुक सकते थे। कभी मुम्बई सेण्ट्रल बस अड्डे पर अख़बार बिछा कर सो जाया करते। एक बार गाँव के गरीब परिवारों को दिलवाने हेतु गायें खरीदने मैं दोण्डाइचा गाँव को गया था। वहाँ से लौटते समय रात डेढ बजे बस से मुम्बई पहुंचा और वहीं बस अड्डे पर अख़बार बिछा कर सो गया। रात में मेरी चप्पल किसीने उडा ली। सुबह जब दूकानें खुलीं, मैंने नंगे पाँव जा कर छह रुपए में हवाई चप्पल खरीदी और फिर मन्त्रालय में जा पहुंचा। जनता के कामों के लिए कई बार मुम्बई जाना पडा। कभी चौपाटी पर समन्दर में डुबकी लगा कर कपडे बदले और सरकारी दफ्तर में गए। कभी रोडवेज़ की बस को देने के लिए पर्याप्त पैसा नहीं होने पर ट्रक की सवारी की। कभी आज़ाद मैदान में कपडे बदले। कभी भोजन के लिए पैसे नहीं बचे तो चने-कुरमुरे खा कर गुज़ारा किया। क्यों कि स्वामी जी के विचार मुझे हर समय प्रेरणा दे रहे थे, हिम्मत दे रहे

थे। मन को हारना नहीं है, भले मौत क्यों न आ जाए, तो भी मंज़िल की ओर चलते चलो। इसी लिए पूरी उम्र मैं न मुसीबतों से डरा, न ही विरोध से डगमगाया, पर अपनी जान को हथेली पर लिए चलता रहा।

इसी दौरान राळेगण सिद्धि व अन्य गाँवों का विकास होता गया। राळेगण सिद्धि में हुए ग्राम विकास कार्य की कीर्ति राज्य में और देश भर में भी फैलती गई। मध्य प्रदेश, ओडिशा, राजस्थान, आन्ध्र प्रदेश जैसे राज्यों ने जलग्रहण क्षेत्र विकास का मॉडल अपने राज्यों में क्रियान्वित करने हेतु मुझे एडवाईज़र नियुक्त किया। उन राज्यों में मुख्य मन्त्री जी के साथ बैठक करने जब मैं जाया करता तब उस राज्य के क्लास वन अफसर मुझे लेने एयरपोर्ट पर आया करते। उस समय मैं वो बीते हुए दिन याद करता कि कभी चने खा कर गुज़ारा किया, कभी अख़बार बिछा कर सो गए। लेकिन इन तामझाम का मुझ पर कोई असर नहीं पडा। क्यों कि जब जीवन का लक्ष्य निर्धारित हुआ तब अहंकार का विसर्जन हो गया। इस तामझाम के कारण दिल में कोई अहंकार, कोई गुदगुदी नहीं पैदा हो पाई। **''कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन''** इस निष्काम भाव से काम करते रहने का व्रत जो लिया था। न ही फल की आकांक्षा थी, न जस-कीर्ति की, न ही नाकामी की और न ही मान-सम्मान या अपमान की परवाह थी। जी हाँ, सेवा के मार्ग पर चलने वालों को कभी नाकामयाबी भी झेलनी पडती है। उसे भी पचाना पडता है।

लेकिन सेवा भाव से काम करने वाले कार्यकर्ताओं को अपने जीवन में कुछ नियमों का अनुसरण भी करना चाहिए। अपने आचार और विचारों को शुद्ध रखें। जीवन को बेदाग़ रखें। किसी बुराई का धब्बा यदि चिपक गया तो पूरी ज़िन्दगी भर बेचैनी रहेगी। धब्बे की वजह से रात को नीन्द नहीं आएगी, गोलियाँ खा कर सोना पडेगा। यह दृष्य हम कई लोगों की जीवनी में देख पाते हैं। दाग़ी लोगों की बात का लोगों पर प्रभाव नहीं होता। उनकी बात कोई मानते नहीं। क्यों कि उनके चरित्र पर लगे दाग़ लोगों को दिखाई देते हैं। कभी यूं भी होता है कि उनके चरित्र पर लगे दाग़ ज़ाहिर में दिखाई नहीं भी पडते। लेकिन उनको ख़ुद को उस बात की ख़बर होती है। यही वजह बनती है कि उन्हें नीन्द की गोलियाँ खानी पडती हैं। इसी लिए ज़रूरी है कि जीवन बेदाग़-निष्कलंक रहे। जीवन में शुद्ध आचार, शुद्ध विचार, निष्कलंक जीवन व त्याग पनपे। हमारे भारत देश में त्याग की परम्परा दीर्घ काल से चलती आ रही है। ऋषि-मुनियों की भारत भूमि हज़ारों सालों से यही कहती आ रही है कि यदि आप गाँव, समाज, देश का भला चाहते हैं तो कुछ तो त्याग करना ज़रूरी है। इस बारे में क़ुदरत का दस्तूर है कि यदि आप अपने **खेत में दानों से भरा भुट्टा देखना चाहते हैं तो ज़रूरी है कि**

दानों से भरा भुट्टा

पहले एक दाना ख़ुद को ज़मीन में गाड लें। जब एक दाना ज़मीन में मिट चला जाएगा तभी तो दानों से भरा भुट्टा नज़र आएगा। अगर वह दाना ज़मीन में गया ही नहीं तो कहाँ से भुट्टा दिखाई देगा? इसी लिए गाँव, समाज व देश की भलाई के लिए ख़ुद को ज़मीन में गाड लेने वाला सिद्धान्त वादी दाना बनने की नितान्त आवश्यकता है। कोई दाने यूं भी सोचते हैं कि क्यों गाड लें ख़ुद को हम ज़मीन में? जब पास में बंगला-मोटर सब कुछ है तो क्यों कर गाड लें? अब कैसे उन्हें पता चले कि **जो दाने ख़ुद को ज़मीन में नहीं गाड लेते वे ही दाने चक्की में पिसते हैं, उनका आटा बनता है, अपना अस्तित्व ही वे खो बैठते हैं।** ज़मीन में गाडे दाने नष्ट नहीं होते, वे हज़ारों दानों को बनाते हैं। सन्त तुकाराम महाराज कहते हैं **''एका बीजा केला नाश। मग भोगिले कनीस''।** मतलब एक बीज ने समर्पण किया तब जा के भुट्टा बना। मैंने 25 साल की उम्र में दाना बन कर ख़ुद को गाड लेने की ठानी। इसी लिए आज भरा पूरा भुट्टा देख पा रहा हूं। पिछले 13 वर्षों में राळेगण सिद्धि का ग्राम विकास कार्य देखने हेतु हमारे राज्य तथा देश भर से और विदेशों में से 12 लाख लोग आए। यहाँ के विकास कार्य का अध्ययन किया। चार लोगों ने पीएच डी की उपाधि हासिल की, और दो करने जा रहे हैं।

कार्यकर्ता को अपमान के घूंट पी जाने की क्षमता बनानी पडेगी। लोगों की भलाई के काम करते समय मुझे कई कठिनाइयाँ आईं, विरोध हुआ, निन्दा होती रही, पर स्वामी विवेकानन्द जी के शब्द कानों में गूंजते रहे- तू न रुकेगा कभी, तू न थकेगा कभी, चलते चलो, चलते चलो... जब तक मौत नहीं आती चलते चलो। **यह एक मिसाल है कि मेरे जैसा एक साधारण कार्यकर्ता जिसके पास धन है न दौलत, जीवन का लक्ष्य निर्धारित कर मौत से न डरते हुए निष्काम भाव से काम करता रहा तो गाँव, समाज, देश के लिए क्या कुछ नहीं कर सकता!** लेकिन कोई ऐसा भी होता है जो मौत से डरता है। बाधाएं आवें, लोग आलोचना करें, निन्दा करें तो रुक जाता है, हाथ में लिया हुआ काम छोड जाता है। केवल भाषण देने से काम नहीं बनता। कृती भी साथ साथ होनी चाहिए। सुभाषितकार कहते हैं कि उक्ति से कृति श्रेष्ठ होती है। जो वक्ता भाषण देते हैं उनका कार्य कैसा है, उनका चरित्र और त्याग कैसा है, अपमान पचाने की शक्ति कितनी है, जनता इस पर बारीकी से ग़ौर करती है। शुरु शुरु में मैं भाषण नहीं देता था। मैं तो भाषण देना भी जानता नहीं था, कैसे भाषण दे पाता? और कुछ किये बग़ैर केवल भाषण ही देता तो क्या ही उनका प्रभाव होता? सन्त कबीर कहते हैं **''कथनी मीठी खाण्ड सी, करनी विष की लोय। कथनी छोड करनी करें तो विष का अमृत होय।''** बात तो इतनी मीठी जैसे शक्कर की डली मगर करनी ज़हर जैसी है। सिर्फ़ भाषण देने के बजाय अपना कर्तव्य करते रहें तो उस विष का भी अमृत बन जाता है।

जब मैंने ग्राम विकास कार्य आरम्भ किया तब गाँव में शौचालय नहीं थे, शौच हेतु सभी लोग बाहर जाया करते थे। मैंने गाँव के लोगों को सुझाया कि सडक किनारे गन्दगी न करें, गाँव में बीमारियाँ फैल सकती हैं। कम से कम सडक किनारे तो न जाएं, खेत में या झाड-झंखाड की आड में जाया करें। पर कई वर्षों से चलती आ रही आदतें ऐसे कहाँ बदलती हैं? बार बार कहा पर कोई फ़र्क़ नहीं। गाँव में मैं तो नया नया दाखिल हुआ था। गाँव वाले क्यों कर मेरी बात मानेंगे? एक दिन मैंने झाडू-बकेट उठाई और मैला उठाने लगा। यह काम मैं रोज़ाना करता रहा। धीरे धीरे लोगों पर असर होने लगा। करीब 10/12 महीने लगे इसे बन्द करवाने में। अब सभी मिल कर सफाई का ध्यान रखते हैं। यानि जब उक्ति को कृति का साथ मिला तो उसका असर हुआ और गाँव साफ़-स्वच्छ हुआ। जीवन का लक्ष्य निर्धारित कर अपनी बात को कृति से जोड दिया जो बहुत असर कारक रहा। अथक प्रयास किए। इतने परिश्रम किये कि मौत का भी डर न रहा। इस कारण मेरी बात को लोग मानने लगे। मेरे गाँव ने हर दम मुझे अपने परिवार का सदस्य माना, पर मैंने किसी के घर में जाने-आने का सिलसिला नहीं रखा। अगर रखता तो कोई परिवार मेरे नज़दीकी माने जाते। इस तरह का भेदभाव गाँव की एकता बनाये रखने

में बाधक होता है। गाँव की हर व्यक्ति की नज़र मुझ पर रहती है। मेरा खान-पान क्या है, कहाँ रहता हूं, मेरा रहन-सहन, मेरा चाल-चलन, मेरी बातचीत -हर बात पर ग़ौर किया जाता है। बिना शादी के जीवन बसर करना आसान नहीं है। और लोग मुझ पर नज़र रखते हैं। इन्सान का मन बडा ही चंचल है। **चंचल क्या, तेज़ है, धोखेबाज भी है। पता नहीं कब धोखा दे दे।** मगर ईश्वर की मुझपर महती कृपा रही है। 82 वर्ष के जीवन काल में इस मन

को क़ाबू में रखने की ताक़त मुझमें बनाए रखी। अपने चरित्र पर कभी तिल के जितना भी कलंक नहीं लगने दिया। इस बात को सब लोग समझते हैं और उसका प्रभाव ग्राम वासियों पर अवश्य होता है।

राळेगण सिद्धि में विविध राज्य और देशों से अध्ययन हेतु आए युवाओं से मैं कहता हूं कि मेरा सन्देश यह नहीं है कि हर कोई युवक अविवाहित रह कर अण्णा हज़ारे बनने का प्रयास करें। आप अवश्य शादी करें, गृहस्थी चलाएं। लेकिन उस गृहस्थी के कामों में से घण्टा- दो घण्टा समय निकाल कर अपनी लघु गृहस्थी के साथ साथ गाँव-समाज-देश को अपनी ही गृहस्थी मानते हुए बडा कारोबार करें। मेरी माली हालत ठीक नहीं थी। अगर शादी कर लेता तो दो वक़्त की रोटी कमाने में ही समय लगाना पडता। फिर कब और कैसे जनता की सेवा कर पाता? इस वजह से मैंने शादी नहीं की। जिनकी माली हालत अच्छी है वे शादीशुदा हो कर भी काम कर सकते हैं। अविवाहित रहने की शर्त अनिवार्य नहीं है। और मेरा तजुर्बा तो यूं भी है कि भले ही **मैंने शादी नहीं की, लेकिन मेरी गृहस्थी कहाँ छूटी? चार दीवारी के भीतर की छोटी गृहस्थी के बजाय मेरी गृहस्थी बहुत बडी, विशाल हो गई।** पहले गाँव की गृहस्थी और अब देश की गृहस्थी! जब गृहस्थी का दायरा बडा हुआ, तो दुख का कारण ही न रहा। छोटी गृहस्थी में सब कुछ 'मेरा' होने की वज़ह से वही दुख का कारण बनता है। बडी गृहस्थी करें। उस लिए ज़रूरी हैं शुद्ध आचार, शुद्ध विचार, निष्कलंक जीवन, त्याग भावना और अपमान, निन्दा, विरोध के प्रति सहनशीलता।

अपमान को पचाने की क्षमता जितनी बढेगी उसी तादाद में काम का परिमाण बढता जाएगा। सामाजिक कार्य करते समय विरोध तो होने वाला है ही। आपके काम की वजह से कुछ बने-बनाये मुखियाओं की प्रतिष्ठा में कमी आएगी, तो उनका विरोध तो होगा ही। किसी की वोट बैंक पर आँच आवे तो वे भी ख़िलाफ़ हो जाएंगे। गाँव के नेताओं के दिल में यह ख़तरा पनपेगा कि अगर गाँव के लोग एक हो जाएंगे तो मेरी नेतागीरी कहाँ चलेगी? समाज के आपसी सम्बन्धों के ताने-बाने बडे विचित्र होते हैं। इसी लिए विविध स्तरों पर विरोध पनपता है। लेकिन **यदि आपके आचार-विचार शुद्ध हों, जीवन निष्कलंक हो, जीवन में त्याग व सहनशीलता हो तो विरोधी जन निष्प्रभ हो जाते हैं, उनकी एक नहीं चलती।** स्वामी विवेकानन्द जी का कहना है कि जब आपकी जीवनी में उपर्युक्त गुण होंगे तो आप अपने में एक दैवी शक्ति का अनुभव करेंगे। उस शक्ति के आगे विरोध करने वालों की कुछ नहीं चलती। विरोध टिक नहीं पाता। आपके इन गुणों की वजह से आपको जनता का साथ मिलता है और विरोध करने वालों की हार हो जाती है। लेकिन **जब आपको विरोध का सामना करना है तब विरोध का जवाब शब्दों से नहीं देना चाहिए। विरोध का जवाब कृति**

से दें। जवाब शब्दों से दोगे तो शब्दों में ही उलझ जाओगे। कभी मारपीट तक नौबत आएगी। इस लिए शब्दों में न उलझते हुए कृति से जवाब दें। गाँव के लोगों में एकता बनाने के लिए शुरु शुरु में 3 से 5 साल लग सकते हैं। ये शुरुआती 3 से 5 साल इतने दूभर होते हैं कि बता नहीं सकते। ग्राम विकास का कार्य आनन-फानन होता नहीं है और जल्दबाजी में हुआ काम लम्बे समय तक नहीं टिक पाता। फिर मत भिन्नता पनपती है। धीमी गति से जनता के सहयोग द्वारा शुद्ध चरित्र तथा सहन शीलता से हुआ ग्राम का विकास कार्य स्थायी होता है। राळेगण सिद्धि गाँव का विकास 45 वर्ष पहले हुआ, और अब तक बना हुआ है। क्यों कि यह विकास धीमी गति से हुआ है। गाँव आदर्श बनते हैं। साधारणत: यूं देखा गया है कि गाँव का आदर्श 10/12 वर्ष तक बना रहता है। फिर जैसी नई पीढियाँ आ जाती हैं, पहेले जैसी चुस्ती नहीं रहती। नई पीढी को नहीं पता कि इस काम को बनाने में हमारे पुरखों ने कितने कष्ट उठाए होंगे।

कार्यकर्ता को अपने मन को क़ाबू में रखना चाहिए। इन्सान के जीवन में जो भी भला-बुरा घटता है वह उसके मन की वजह से घटता है। मन पर लगाम कसी रहे तो जीवन सफल होता है। भरी जवानी में मैंने फैसला किया कि शादी नहीं करूंगा। ड्राइविंग करते समय सडक पर चलता कोई नया शादीशुदा जोडा दिखाई देता तो मेरा मन मुझे सवाल करता कि ''क्या वे सही हैं या तू?'' फिर स्वामी विवेकानन्द जी के विचार जवाब देते, ''तू ही सही है।'' फ़ौज में बडा खाना हुआ करता है। कोई पति-पत्नी अपने बच्चे को गोद में लिए शरीक होते तो फिर मन वही सवाल दोहराता। बार बार मन ने सताने की कोशिश की पर मन को मैंने कस कर बाँध रखा था। बोलना आसान है पर मन को जकडे रखना बहुत कठिन और दूभर है। तलवार की धार पर चलने जैसा है। पर मेरा ख़ुद का अनुभव है कि मुश्किल है पर असम्भव नहीं। ऋषि पाराशर ने हिमालय में एकान्त में रह कर लम्बे समय तक कठोर तपस्या की पर उसके बाद भी मन ने धोखा दे ही दिया। वो ही कहानी ऋषि विश्वामित्र की भी है। इस लिए ज़रूरी है कि कार्यकर्ता अपने शरीर व मन को कस कर बाँधे रखे। सन्त कबीर फरमाते हैं, ''मन गया तो जाने दो, मत जाने दो शरीर।'' वासनाएं कभी कभार मन पर हावी होंगी भी। उन्हें रोकने का प्रयास अवश्य करें। पर मन गया भी तो भी शरीर को रोके रखें ऐसे कबीर कहते हैं। क्यों कि मन बडा ही चंचल, तेज़, धोखेबाज है, पता नहीं कब धोखा दे दे। किन शब्दों में मैं ईश्वर के उपकार का आभार करूं कि उसने मुझमें वह शक्ति पैदा की कि मैं अपने मन व शरीर को कस कर बाँधे रख सका। इसी शक्ति की बदौलत मेरी 82 वर्ष की जीवनी में हर महिला में मैंने माँ या बहन के ही दर्शन किये। चरित्र पर कभी तिल जितना भी दाग़-धब्बा नहीं आने दिया। यही कारण है कि गाँव, समाज, देश की कुछ सेवा कर पाया। यदि ज़रा सा भी दाग़ मेरे चरित्र पर होता तो कुछ

लोग मुझे ध्वस्त करने को तुले बैठे थे। निष्काम भाव से अब तक काम करता रहा, फिर भी मेरा कुसूर निकालने वाले, मेरी निन्दा करने वालों की कमी नहीं है। पर लोगों पर उनका कोई ख़ास प्रभाव नहीं होता। कार्यकर्ता का मन जितना साफ और निर्मल हो उतना आनन्द उसे मिलता रहेगा। मन अपने जीवन का आईना है और यह आनन्द भी अपने भीतर से, अन्तर से प्रकट होता है।

सुबह उठने से ले कर रात सोने तक इन्सान आनन्द पाने के लिए भागता दौडता रहता है। अपने अन्तर में वसने वाली आत्मा रूपी चेतन शक्ति आनन्द स्वरूपी होने के कारण यह स्वाभाविक भी है। पर यह चाहना अखण्ड आनन्द की है। आनन्द की खोज में है पर अखण्ड आनन्द नहीं पा रहा। इस लिए कि वह उन्हें बाहर ही ढूंढ रहा है। और बाहर मिलने वाला आनन्द तो पल भर का आनन्द है। दाखिले के तौर पर जब नई कार खरीदते हैं तो बडी ख़ुशी होती है। और वही ब्रेक डाऊन हो जाती है तो बडा दुख होता है। क्यों कि हर चीज़ नाशवन्त है। और विनाश दुखदायी है। नई चीज़ आने पर आनन्द होता है और

6 अप्रैल 1992 महामहिम राष्ट्रपति जी से 'पद्मभूषण' सम्मान

नष्ट हो जाने पर दुख होता है। मुझे राष्ट्रपति जी द्वारा 'पद्म' पुरस्कार मिले। अपने राज्य में, देश में और विदेशों में कई पुरस्कार मिले जिनसे प्राप्त राशि करोडों में है। पर मैंने वह रकम अपने पास रखी ही नहीं। गाँव में करोडों रुपयों की लागत के विकास कार्य हुए पर उनमें से 5 रुपए तक पाने की इच्छा कभी नहीं हुई। अमरीका, साऊथ कोरीया, कैनडा आदि देशों से प्राप्त पुरस्कारों की राशि अगर मैं मेरे पास रखता तो हो सकता है मुझे भी रात सोते समय नीन्द की गोलियाँ खानी पडती। आज बिस्तर पर लेटते ही कब नीन्द लग जाती है, पता ही नहीं चलता। पुरस्कार में प्राप्त करोडों रुपयों की राशि को 'स्वामी विवेकानन्द कृतज्ञता निधि' इस न्यास का निर्माण कर जन सेवा

केयर इण्टरनैशनल पुरस्कार (अमरीका)

एलार्ड पुरस्कार (कनाडा)

हेतु समाज को समर्पित कर दिया है। सन्त यादव बाबा मन्दिर में एक 10 फीट बाई 12 फीट के कमरे में मैं रहता हूं। भोजन की थाली और लेटने के बिस्तर के अलावा कोई ज़ायदाद अपने पास नहीं रखी। **गाँव की पुश्तैनी खेती और घर भाई के सुपुर्द है। 45 वर्ष हुए उस घर में क़दम रखे हुए। भतीजों के नाम तक याद नहीं।** मुम्बई में एक बहन रहती है, उसका पता भी याद नहीं। मगर **मेरा मानना है कि जिस आनन्द का मैं अपने जीवन में हर पल अनुभव करता हूं वह लखपति, करोडपतियों को भी नहीं मिलता होगा।** यह न सिर्फ़ कहने की, मेरे अनुभव की बात है।

एयर कण्डिशण्ड मकान में नीन्द की गोलियाँ खा कर सोने वाले लोग भी यहाँ हैं। सन्तों की कहानियाँ बताती हैं कि उनके घर में कुछ भी नहीं हुआ करता था। मटके, बर्तन सब खाली होते थे। पर दोहों में वे लिखते हैं– ''आनन्दाचे डोहीं आनन्द तरंग।'' आनन्द के दरिया में आनन्द की लहरें उठ रही हैं। हमारे आनन्द का कोई पार ही नहीं है। यह आनन्द बाहर का, बाह्य नहीं था, अपने अन्तर से मिलने वाला आनन्द था। समाज के हित में भलाई का काम निष्काम भाव से करने पर दुखी–पीडित जनों के चेहरे जब ख़ुशी से दमक उठते थे तो इसी आनन्द की अनुभूति हुआ करती थी।

जन्म पाने वाला हर जीव शुद्ध ब्रह्म चैतन्य स्वरूप होता है। खाली हाथ पैदा हुआ। फिर नामकरण हुआ और जिस 'मैं' की मुझे पहचान नहीं थी, वह 'मैं' बन गया। उस नाम से लोग बाग़ मुझे पुकारने लगे और पता चला कि ये तो मेरा नाम है! नामकरण बुरा नहीं है। इन्सान में अच्छे–बुरे गुण होते हैं। उन गुणों के कारण आदमी भले–बुरे काम करता है और लोग उस इन्सान को भला या बुरा मान लेते हैं। उस भले–बुरे इन्सान की पहचान के लिए नाम का होना ज़रूरी है। पर नाम के साथ ही 'मैं' का भी निर्माण हो जाता है और साथ ही साथ 'मैं–मेरा..' का भी जो कि दुख का कारण बनता है। जब मैं पैदा हुआ तब मेरा कुछ भी नहीं था। आज मैं अनुभव करता हूं कि गाँव में मेरा घर है पर 45 साल में वहाँ गया ही नहीं। क्यों कि वह मेरा है ही नहीं फिर क्यों जाऊं? इस लिए दुख का नामो–निशान भी नहीं। करोडों रुपयों के पुरस्कारों को सम्भाल कर नहीं रखा, क्यों कि वे मेरे थे ही नहीं, फिर किस लिए सम्भालूं? दुख की वजह ही नहीं रही। जब 'मैं–मेरा..' नहीं रहा तो दुख है कहाँ? जीवन में बचा सिर्फ़ आनन्द। लेकिन यह बहुत मुश्किल है क्यों कि हर इन्सान पर बचपन ही से 'मैं–मेरा..' के संस्कार हो जाते हैं। फिर भी बताना चाहूंगा कि मुश्किल ज़रूर है, नामुमकिन नहीं। 'मैं–मेरा..' के संस्कार अपने निजि शुद्ध स्व–रूप पर ऐसा लेपन करते हैं कि मूल स्वरूप ढक जाता है। किसी के कृपा–कटाक्ष के कारण पर्दा उठता जाता है और धीरे धीरे शुद्ध स्वरूप प्रकट होता है। जैसे जैसे आत्म–स्वरूप दिखाई पडता है आनन्द में वृद्धि होती जाती है। गृहस्थी का जब विस्तार होता है, गाँव, समाज

सन्त ज्ञानेश्वर महाराज समाधि पूजन

और देश ही अपनी गृहस्थी बन जाते हैं तो क्रमश: 'मैं-मेरा..' कम होते जाता है। जिस मात्रा में वह कम होगा उतनी ही मात्रा में आनन्द में वृद्धि होगी। इस लिए ज़रूरी है कि गृहस्थी का विस्तार हो। अपनी छोटी गृहस्थी करते हुए अपने गाँव के लिए घण्टा-दो घण्टा समय निष्काम भाव से दिया करें। इस से गृहस्थी का विस्तार होगा, आनन्द की प्राप्ति होगी। घर-बार, सगे-सम्बन्धी, बारादरी - किसी को छोडने की आवश्यकता नहीं। सिर्फ़ 'मैं-मेरा..' न कहते हुए यह सब किया करें। मुश्किल सही पर नामुमकिन नहीं।

सम्माननीय मारुती महाराज कुऱ्हेकर के हाथों से अनशन का समापन

उम्र के 25वें साल में जब मैंने मान लिया कि जीवन का सही अर्थ सेवा - गाँव की, समाज की, देश की सेवा है। सन्त ज्ञानेश्वर महाराज की समाधि पर मैं गया। समाधि के दर्शन कर वहाँ तुलसी माला चढाई और उसे पहन ली। सन्त ज्ञानेश्वर जी की समाधि पर प्रण किया कि अब मेरे गले में न केवल यह तुलसी की माला है बल्कि इस देह की आसक्ति से छुटकारा पाने का 'तुलसी-पत्र' है। इसी क्षण से मेरा यह देह मैं गाँव-समाज और देश को अर्पण करता हूं।

'सूचना का अधिकार' कानून में संशोधन करने की बात चली तब मैंने आळंदी में संत ज्ञानेश्वर महाराज की समाधि पर अनशन शुरु किया। अनशन छुडवाने के लिए मन्त्री महोदय आए। मैंने साफ़-साफ़ बता दिया कि जिनके हाथ बेदाग़ हैं उन हरि भक्ति परायण मारुती महाराज कुऱ्हेकर जी के हाथों मैं अनशन समाप्त करूंगा।

आळंदी से और भी एक प्रेरणा मैंने पाई। ज्ञानेश्वर महाराज की लिखी 'ज्ञानेश्वरी' के 14वें अध्याय की गाथा 234 में कहा है- **"नगरेंचि रचावीं। जलाशयें निर्मावीं। महावनें लावावीं। नानाविध।"** यानि कि हर सम्भव नगर बसाएं, तालाब बनावें, वनों का निर्माण करें। पानी रोको, पानी रिसाओ, वनों का निर्माण करो। सात सौ वर्ष पहले सन्त ज्ञानेश्वर जी ने जनता को यह पैग़ाम दिया। राळेगण सिद्धि में इस गाथा पर अमल करना शुरु किया। अकाल ग्रस्त, खाली पेट रहने वाला हमारा गाँव। गाँव की 80 प्रतिशत जनसंख्या को दो वक़्त रोटी नहीं मिल पाती थी। पीने का पानी नहीं मिलता था। गर्मियों में पीने के पानी के

श्री सन्त यादव बाबा दूध उत्पादक सहकारी संस्था

बगीचे के फल

लिए सरकारी टैंकरों द्वारा पानी दिया जाता था। गाँव में रोज़गार नहीं मिलने से गाँव से 6 कि.मी. दूर मज़दूरी करने जाने वाले गाँव ने ज्ञानेश्वरी की इस एक गाथा का अनुसरण किया, और गाँव के नाक-नक़्श बदल गए। जिस गाँव में सिर्फ 300 लीटर दूध नहीं हुआ करता वहाँ से हर दिन 6000 लीटर दूध बाहर भेजा जाने लगा। केवल दूध के ज़रिए रोज़ाना दो लाख रुपयों की आमदनी गाँव में आने लगी। 100/125 ट्रक भर कर प्याज़, सब्ज़ियाँ, फल आदि भेजे जाने लगे। गाँव का अर्थकारण बदल गया। रोज़गारी हेतु 6 कि.मी. दूर जिन्हें जाना पडता था, उस गाँव में आज काम के लिए पाँच मज़दूर नहीं मिल पाते। प्राकृतिक संसाधनों का शोषण न करते हुए प्रकृति के वरदान का समुचित लाभ उठाया। ज्ञानेश्वरी की गाथा का अनुसरण करने - जलाशय बनाने हेतु बस बारिश के पानी की रोकथाम की, पानी को ज़मीन में रिसाया। भूजल का स्तर ऊपर उठाया। जिस गाँव में 300

अनार बाग़

खेती विकास

अनार बगीचा

तरबूज बगीचा

एकड ज़मीन को एक फ़सल उगाने को पर्याप्त पानी नहीं मिल पाता था, वहीं पर 1200 एकड ज़मीन में दो दो फ़सलें होने लगीं। बेरोज़गारी समाप्त हुई। सन्त नामदेव महाराज कहते हैं, **''नामा म्हणे ग्रन्थ श्रेष्ठ ज्ञानेश्वरी। एक तरी ओवी अनुभवावी।''** एक दोहे का तो अनुसरण करें। कितना सामर्थ्य है सन्तों के एक-एक दोहे में! राज्य के और देश भर से कई लोग इसे देखने आते हैं और प्रेरणा पाते हैं। सन्तों के एक दोहे से हमारे राज्य को और देश को ग्राम विकास कार्य के लिए एक नई दिशा मिल गई। सन्त नामदेव जी आगे कहते हैं, **''जे वृक्ष लाविती सदा सर्व काळ। तयांवरी छत्रांचे झल्लाळ।''** जो लोग निरन्तर पेड लगाते रहते हैं, उन पर छत्र छाया बनी रहती है। प्राकृतिक संसाधनों के शोषण से हुआ विकास शाश्वत विकास नहीं है। ऐसे विकास से प्रदूषण बढता जा रहा है। गांधी जी ने कहा है प्रकृति के शोषण से होने वाला विकास विनाशकारी है। प्रकृति का शोषण न करते हुए **प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग से हुआ विकास ही शाश्वत विकास है,** प्रदूषण मुक्त विकास है।

सन्त तुकाराम महाराज कहते हैं, **''वृक्षवल्ली आम्हां सोयरे वनचरें।''** पेड-पौधे और वन्य जीव-जन्तु हमारे सगे-सम्बन्धी हैं। सब सन्तों ने यही पर्यावरण रक्षण का सन्देश दिया है। क्यों कि ऐसे विकास में पेट्रोल, डीज़ल, घासलेट, कोयला आदि संसाधनों का अनाप-शनाप व्यय नहीं होता। प्रदूषण नहीं होता। सन्तों ने विकास के साथ प्रकृति व सामाजिक पर्यावरण सन्तुलन का भी ख़याल रखा है।

गाँव, समाज, देश के विकास कार्य के साथ ही समाज पर होने वाले ज़ुल्म-अत्याचार के खिलाफ़ अहिंसक संघर्ष भी तो सेवा ही है। जब भी समाज पर अन्याय, अत्याचार होगा तब उसका विरोध होना ही चाहिए। सन्तों ने यही सीख हमें दी है। **''भले तरि देऊ कासेची लंगोटी। नाठाळाचे माथी हाणू काठी।।.. दया तिचे नाव भूतांचे पालन। आणिक निर्दाळण कंटकांचे।।.. मऊ मेणाहून आम्ही विष्णुदास। कठीण वज्रास भेदूं ऐसे।''** भले आदमी के लिए सब कुछ निछावर करेंगे मगर टेढे को लाठी का सबक सिखाएंगे। भूतमात्र पर दया भाव रखेंगे और दुष्टों का निर्दालन करेंगे। यों तो हम वैष्णव जन मोम से भी नर्म-मुलायम हैं पर प्रसंग वश वज्र को तोड दें इतने सख़्त भी हैं। तो सन्तों ने यही कहा है कि समय पडने पर हिंसा का अवलम्बन न करते हुए अहिंसक आन्दोलन करना भी तो दया भाव ही है।

सन्त तुकाराम महाराज ने अपने जीवन में हुई नाइन्साफी के खिलाफ़ इंद्रायणी नदी के तट पर अनशन आन्दोलन किया था। सन्त निळोबा राय ने भी अनशन किया था। इन्हीं सन्तों के आदर्श से प्रेरणा पा कर समाज पर हो रहे अन्याय-अत्याचार के खिलाफ़ मैंने

सन 1999 आळंदी (पुणे) अनशन

सन 1994 आळंदी (पुणे) अनशन

20 बार अनशन आन्दोलन किये। सन्त ज्ञानेश्वर महाराज की समाधि के सम्मुख तीन बार अनशन किए। फलस्वरूप राज्य सरकार व केन्द्र सरकार ने जनता के हितकारी विभिन्न कानून बनाए जैसे कि सूचना का अधिकार, सरकारी दफ्तर में विलम्ब, जनता की सनद, लोकपाल, शराब बन्दी आदि। इन कानूनों का लाभ जनता ले रही है।

सन 1975 में फ़ौज से पेंशन पा कर मैं गाँव को लौट आया। आळंदी में सन्त ज्ञानेश्वर महाराज की समाधि पर जा कर माला धारण की। लेकिन सन्तों की सीख का मेरे हृदयान्तर में प्रवेश नहीं हुआ था। हाँ, मेरे हृदय में प्रविष्ट आध्यात्मिक विचारों को बल ज़रूर मिला था। फिर भी लग रहा था कि जीवन के 12 साल सेना में बिताने की वजह से सन्त बानी का समुचित श्रवण नहीं हो पाया। सन्त समाधि पर माला ग्रहण कर मैंने सन्त बानी श्रवण करने की ठान ली। साल के चार महीने श्री क्षेत्र पण्ढरपुर में चातुर्मासिक निवास कर विभिन्न साधु-पुरुषों से सन्त वाणी का श्रवण किया करता। केवल सन्त वाणी सुनना यही उद्देश्य था। सुबह चन्द्रभागा नदी में स्नान, फिर श्री विठ्ठल दर्शन, साधुपुरुषों द्वारा कीर्तन-प्रवचन के माध्यम से सन्त विचारों का श्रवण, सायंकाल मंदिर प्रदक्षिणा एवं चिन्तन का दिनक्रम बना रहता। छह साल यह उपक्रम चला। साल में आठ महीने जन सेवा का काम और चार महीने सन्त विचारों का श्रवण। इन छह चातुर्मासों ने मेरे मन में अध्यात्म विचार को बल दिया। जीवन की पहेलियाँ सुलझती गईं। कोई इसे मेरी अन्ध भक्ति भी मान लेंगे। पर मैंने वह की है। मैं गले में तुलसी माला पहनता हूं, मन्दिर में रहता हूं। पर आँख मून्द कर केवल माला जपते नहीं बैठा रहता। सन्त वचन है, **"माला तो कर में फिरै, जीभ फिरै मुख माँहि। मनवा तो दस दिसा फिरै, ता को सुमिरन नाहिं।।"** नहीं, मैं केवल माला फेरते नहीं बैठ सकता। मैं ईश्वर को खोजता हूं दीन-दुखियों में। दीन-दुखी-पीडितों की सेवा ही ईश्वर की पूजा है इसी भाव से निरन्तर वह चलती रहती है। दीन-दुखियों की संख्या बहुत बडी है। जितना सम्भव है, मैं अपने प्रयास करते रहता हूं। यही कारण है कि अनहद प्रसन्नता का मैं साक्षात् अनुभव करता हूं। माला जपता, नामस्मरण ही करता रहता तो हो सकता है कि मेरा अकेले का उद्धार हो जाता। मगर सन्त वचन है कि **"आपण तरला तें नव्हें तारण उद्धरण। लोकांस लावी सन्मार्ग पूर्ण। तोचि तरला पूर्ण पणें।।"** सिर्फ़ अपने अकेले के उद्धार

पण्ढरपुर में महा पूजा

का प्रयास करना भी तो स्वार्थ ही है। अपने साथ समाज के बारे में भी सोचना चाहिए। मेरा पूरा यक़ीन है कि **दिशाहीन समाज को केवल सन्तों के विचारों से ही सही दिशा मिल पाएगी। विज्ञान अन्तरिक्ष में जा पहुंचा है। आदमी चाँद पर जा पहुंचा, कल और कहीं पहुंच जाएगा। मगर मानव प्राणि के अन्तरंग में यदि अध्यात्म का प्रवेश नहीं हुआ तो अन्तरिक्ष में ले जाने वाला विज्ञान, विकास का भुलावा दे कर मानव जाति को विनाश की कगार पर ले जाएगा।** विज्ञान के आविष्कार आश्चर्यकारी हैं। मगर यह स्थिति भी उसीकी देन है कि सिर्फ़ एक बटन के दबते ही कोई देश का देश पूरा ध्वस्त हो सकता है। और इसी की चिन्ता दुनिया भर को खाये जा रही है। क्या हमें ऐसे विज्ञान की ज़रूरत है? विज्ञान को अध्यात्म विचार से अलग रखने के कारण इस स्थिति को हम पहुंचे हैं। विज्ञान और अध्यात्म को एक दूसरे से जोडना यही समय की पुकार है।

चातुर्मास का एक और भी लाभ हुआ। सन्त वाणी के श्रवण से धन, दौलत, माया, मोह के प्रति मन की तनिक भी आसक्ति नहीं रही। बस गाँव, समाज, देश की सेवा निष्काम भाव से करते रहना यही भाव पक्का हुआ। सफलता मिले या न भी मिले। विचारों में दृढता आ गई। पता चला कि त्याग में शान्ति है और भोग में रोग है। उसका अनुभव भी होता रहा। निष्काम कर्म करते जाना। न किसीसे कुछ माँगना है, न किसीसे कुछ लेना। निरन्तर कर्म निष्काम भाव से करते जाना। जीवन यापन के लिए मिलने वाली पेंशन पर्याप्त थी। किसी पर बोझ बनने की नौबत नहीं आई। यही कारण था कि बडी बडी परियोजनाओं के निर्माण कार्य करते समय फूटी कौडी की भी अपेक्षा नहीं थी। सार्वजनीन जीवन में पारदर्शिता लाने हेतु मेरा अपना बैंक पासबुक भी कभी अपने पास नहीं रखा। कोई भी उसे देख पाए इतनी पारदर्शिता रखी। मेरे बैंक खाते का हिसाब-किताब सब के लिए खुला रखा। पारदर्शिता का सार्वजनीन जीवन में बडा मोल है। शको-शुबहा की गुंजाइश ही न रहे। **मैं ईश्वर में आस्था रखता हूं। ज़िन्दगी भर ईश्वर से यही वर माँगता रहा कि मुझे किसी का दुख न देखना पडे।** बस और कुछ नहीं माँगता मैं भगवान से। विरोध, निन्दा, अपमान का कई बार सामना किया मगर दिल को हारने नहीं दिया। मैं राजनेताओं के भ्रष्टाचार को उजागर करता हूं इस लिए बदले की भावना से मुझे जेल भी भिजवाया गया। फिर भी निराशा नहीं छाई। मैं जान चुका था कि **फलदार पेड ही पत्थरों का निशाना बनते हैं।** जो फल नहीं देते उनको पत्थर नहीं झेलने पडते। आम के पेड पे पत्थर पडते हैं, बभूल पर नहीं। सन्तों ने कहा है ''निन्दक नियरै राखिये।'' निष्काम कर्म ही ईश्वर की पूजा है इस भाव से कर्म करता रहा। जब तक शरीर में प्राण

यरवडा जेल जाते हुए (पुणे)

हैं यह पूजा जारी रहेगी। अब तो यह बात मन की लगी हो गई है। इस पूजा से मिलने वाला आनन्द बडा अनोखा है। जो आनन्द की खोज करते हैं उनसे मैं कहूंगा कि मैं सच्चा आनन्द पा रहा हूं। कोई शायद न भी समझ पाए कि कितना आनन्द मैं ले रहा हूं। शक्कर खाने वाले को कोई पूछे कि शक्कर कितनी मीठी है? तो कहेगा कि बहुत मीठी है। पर बहुत मीठी यानि कितनी मीठी यह तो तब समझ पाएगा जब ख़ुद अपने मुंह से चखेगा। ये तो गूंगे का गुड है। बताने की नहीं, अनुभव की बात है।

समाज के लिए आवश्यक विकास कार्यों को गतिमान् करना और उन विकास कार्यों में लगे भ्रष्टाचार के छेदों को मिटाना ये एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। विकास कार्यों का काम करते करते यह बात समझ आई कि विकास काम के लिए प्रस्तावित निधि भ्रष्टाचार

आन्दोलन के समर्थन में रैली

अण्णा हजारे यांचे ७ जुन पासुन प्राणांतीक उपोषण

अनशन वार्तांकन सन 1983

के कारण बडे पैमाने पर रिसता जा रहा है। जिन गरीबों के लिए उसका प्रयोजन है उनके बजाय किसी बिचौलिये का धन बन रहा है। नतीजा यही निकलता है कि इस चोरी की क़ीमत वसूलने के लिए घटिया स्तर का काम किया जाता है। अगर इस रिसाव को नहीं रोका गया तो विकास की निर्धारित लक्ष्य प्राप्ति नहीं होगी। सन 1975 में गाँव में विकास कार्य का श्रीगणेश किया और सन 1990 में भ्रष्टाचार के खिलाफ़ लडने की शुरुआत की। जिन जिन सरकारी महकमों में भ्रष्टाचार दिखाई दिया, वहाँ सबूत इकट्ठा कर उनके आधार पर जाँच की माँग की, यदि माँग को मंज़ूर नहीं किया गया तो धरना, मोर्चा, मौन आन्दोलन, अनशन इन अहिंसक तरीकों से आन्दोलन चलाए। पूरे महाराष्ट्र राज्य में ये आन्दोलन एक ही समय पर होने लगे। सरकार पर दबाव बढने लगा। सर्वदूर पनपते भ्रष्टाचार के कारण महँगाई बढने लगी। महँगाई की आग में गरीब लोग झुलसने लगे। यूं तो सरकारी दफ्तर में काम करवाना जनता का हक़ था लेकिन बिना घूस दिए किसीका काम नहीं हो पाता था। जनता त्रस्त हो उठी। भ्रष्टाचार विरोधी जन आन्दोलन जनता के मन की बात बोलता था। इस आन्दोलन को जनता का अच्छा समर्थन मिलने लगा। सन 1997 में 'भ्रष्टाचार विरोधी जन आन्दोलन न्यास' के नाम से धर्मादाय आयुक्त से विधिवत् पंजीकृत न्यास की स्थापना

की। यह आन्दोलन भी तो समाज, राज्य और राष्ट्र की सेवा हेतु ही शुरु किया। उस आन्दोलन से कुछ भी नहीं पाना था, मात्र जनता की सेवा के लिए उसे आरम्भ किया।

यह बात मैंने पक्की ठान ली थी कि विकास कार्य तथा विकास कार्यों को लगी भ्रष्टाचार के रिसाव की बीमारी की रोकथाम ये दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। इन दोनों को साथ साथ किये बग़ैर गाँव, समाज, देश उज्वल भविष्य का सपना नहीं देख सकते। समाज और देश की सेवा के लिए मैंने दोनों ही काम शुरु कर दिये। कुछ लोगों को लगा कि ये उनकी पार्टी के खिलाफ है। जिन व्यक्तियों के भ्रष्टाचार के खिलाफ आवाज़ उठाई, वे भी यूं ही समझ बैठे कि यह आन्दोलन उस व्यक्ति के खिलाफ है। यद्यपि **रेडीमेड कपडे की दूकान में रखे कपडे किसी एक का नाप ले कर तो नहीं सिलते हैं, फिर भी किसी न किसी व्यक्ति को फिट हो ही जाते हैं।** और जिसे फिट होते हैं वह भी ये सोच सकता है कि ये कपडे मेरे ही नाप से सिले हैं! आन्दोलन किसी व्यक्ति विशेष के खिलाफ नहीं था, वह भ्रष्टाचार की प्रवृत्ति के खिलाफ चला अभियान था और है। इस आन्दोलन की वजह से जाँच पडताल कर दोषियों के खिलाफ कार्रवाई करने के लिए सरकार बाध्य हो गई। भ्रष्टाचार के सबूत मिलने के कारण विभिन्न पार्टियों के छह मन्त्रियों को मन्त्रिमण्डल से हटाया गया। 400 से अधिक भ्रष्ट अफसरों को हटाया गया। भ्रष्टाचारियों पर बडी तादाद में कार्रवाई हुई। लेकिन यह बात भी साफ़ है कि केवल भ्रष्ट मन्त्रियों या अफसरों को हटाने से भ्रष्टाचार रुकने वाला नहीं है।

कानून के आधार पर देश का संचालन होता है। सख़्त कानून के द्वारा भ्रष्टाचार को रोका जा सकता है इस सोच से जनता को सूचना का अधिकार मिलना चाहिए। सरकारी कार्यालयीन विलम्ब, सिटिज़न चार्टर, ग्राम सभा का सबलीकरण जैसे भ्रष्टाचार की रोकथाम करने वाले दस कानून बनाने को सरकार को बाध्य किया। इन कानूनों के कारण भ्रष्टाचार की अच्छी खासी रोक थाम करना सम्भव हुआ। सरकार किसी भी पार्टी की रहे, भ्रष्टाचार की रोकथाम और लोकतन्त्र का सबलीकरण करने के लिए सरकार पर जन शक्ति का दबाव लाना ज़रूरी बनता है। हमारे संविधान के मुताबिक अहिंसक आन्दोलन करना जनता का हक़ बनता है। डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर जी ने इतना बढिया संविधान बनाया है, मगर

आन्दोलन की माँगें

अमरीका में भीड को सम्बोधन

जनता और कार्यकर्ता संविधान और कानूनों को समझने की कोशिश नहीं करते। फिर मैंने महाराष्ट्र राज्य तथा देश भर में विभिन्न स्थानों पर विभिन्न विषयों पर लोक शिक्षा और लोक जागरण हेतु कई सभाएं कीं।

इन सभाओं के लिए लम्बी यात्राएं कीं। यात्रा में दो जीप गाडियाँ साथ हुआ करतीं। उनका डीज़ल, साथ चलने वाले 10/12 कार्यकर्ताओं का खाना, रहना आदि का रोज़मर्रा का खर्च हुआ करता था। मेरे पास कोई बैंक बैलेन्स नहीं था। **रोज़ाना सभा में लोगों के सामने मैं झोली फैलाता और जनता को झोली भरने का आह्वान करता था। लोग 5/10/20 रुपए झोली में डाला करते।** जमा हुई रकम गिन कर उसी सभा में घोषित की जाती और

दिण्डोरी (नाशिक)

सूचना का अधिकार कानून के प्रचार-प्रसार हेतु वैन

जनजागरण का वाहन

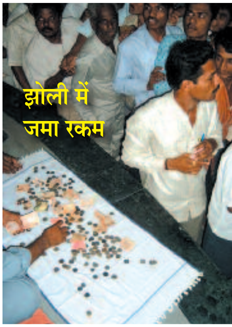

झोली में जमा रकम

नागपुर में सभा

रसीद बना कर न्यास में जमा की जाती। हर खर्चे का वाऊचर बनता। एक रुपये की भी हेरीफेरी की कोई गुंजाइश नहीं थी। इतनी पारदर्शिता होने के बावजूद भी कुछ लोगों ने उंगली उठाई। कहावत भी तो है कि जिस रंग का चष्मा पहनोगे, दुनिया उसी रंग में रंगी दिखेगी। लेकिन सभी व्यवहार बिल्कुल साफ होने से उनकी कुछ न चली।

महाराष्ट्र राज्य में लोक शिक्षा, लोक जागरण के लिए लगातार 10 वर्ष मैं भ्रमण करता रहा। उसकी बदौलत राज्य के 33 ज़िलों के 252 तहसीलों में कार्यकर्ता संगठित हुए। संगठन के प्रभाव से सरकार पर दबाव बना और जनता के लिए दस नए कानून बने। इस लिए जो भ्रष्टाचार के खिलाफ काम करना चाहते हैं, उन आन्दोलन कारियों को विशाल संगठन बनाना आवश्यक है। बिना संगठन के जन शक्ति का समर्थन नहीं मिलेगा। संगठन बढेगा तभी शासन पर दबाव ला सकेंगे। शासन पर दबाव बनाना हर किसी का फ़र्ज़ बनता है। इस हेतु लोक शिक्षा, लोक जागरण यात्राएं अनिवार्य हैं। शासकीय कोषागार में

झोली में पैसे जमा करते हुए

प्रचार–प्रसार का वाहन

यवतमाळ में सभा

बुलढाणा में सभा

चन्द्रपुर में सभा

नाशिक में सभा

जनलोकपाल आन्दोलन, राळेगण सिद्धि सन 2013

अनशन आळंदी (पुणे)

रामलीला मैदान, दिल्ली आन्दोलन सन 2011

अनु.	जन जागरण यात्रा का विषय	कब से	कब तक	कुल दिन
1	भ्रष्टाचार विरोधी जन आन्दोलन न्यास की भूमिका का प्रचार-प्रसार	08/12/1996	18/12/1996	11
2	सूचना का अधिकार कानून जन आन्दोलन जन जागरण	31/10/1998	14/11/1998	15
3	संगठन निर्माण व जन जागरण	01/05/2001	31/05/2001	31
4	भ्रष्टाचार विरोधी जन जागरण	01/05/2003	17/08/2003	41
5	सूचना का अधिकार लोक-शिक्षा व मतदाता जागृति	02/05/2004	11/10/2004	46
6	युवा जागरण अभियान	03/01/2005	03/08/2005	100
7	सूचना का अधिकार कानून में संशोधन के विरोध में जन जागरण	20/02/2006	09/11/2006	65
8	भ्रष्टाचार विरोधी जन आन्दोलन न्यास संगठन का मज़बूती करण	04/03/2007	01/11/2007	167
9	भ्रष्टाचार विरोधी जन आन्दोलन न्यास संगठन का मज़बूती करण	10/06/2009	20/08/2009	73
10	लोकपाल लोकायुक्त कानून के लिए जन आन्दोलन जन जागरण	07/03/2011	30/03/2011	24
11	महाराष्ट्र लोकायुक्त कानून के लिए जन जागरण	01/05/2012	07/06/2012	35
12	सच्चा लोक तन्त्र - चुनाव चिह्न हटाओ जन तन्त्र मोर्चा	17/10/2012	01/11/2012	16
13	सच्चा लोक तन्त्र - चुनाव चिह्न हटाओ जन तन्त्र मोर्चा	30/03/2013	03/08/2013	46
14	किसानों की समस्याएं, लोकपाल दिल्ली आन्दोलन जन जागरण	22/11/2017	17/03/2018	5
महाराष्ट्र राज्य तथा देश में कुल 729 दिन की यात्राएं				

जमा होने वाला धन जनता का धन है। निर्वाचित लोक प्रतिनिधि तथा सरकारी कर्मचारी जनता के सेवक हैं। सरकारी कोष में से होने वाले जो भी खर्च, जहाँ भी खर्च होते हों, उनके हिसाब किताब की पूछ ताछ करना जनता का फ़र्ज़ बनता है।

विभिन्न महकमों में हुए भ्रष्टाचार की जाँच कर सबूत पेश करने पर भी जब सरकार कार्रवाई नहीं करती थी, तब पूरे राज्य में धरना, मोर्चा आदि आन्दोलन करने का निर्णय हुआ करता। बडी संख्या में जनता शामिल हो कर अपना समर्थन दिया करती। उसके बाद भी यदि सरकार की ओर से कोई कार्रवाई नहीं होती तो फिर अनशन का अवलम्ब करते थे। मैंने 20 बार अनशन किये हैं।

अपने राज्य में भ्रष्टाचार के खिलाफ आन्दोलन करते करते देश में भ्रष्टाचार रोकने हेतु लोकपाल-लोकायुक्त कानून बनाने के लिए दिल्ली में अप्रैल 2011, अगस्त 2011 और मार्च 2018 में आन्दोलन किए। 2011 के रामलीला मैदान, दिल्ली के आन्दोलन में हुए 13 दिवसीय अनशन को देश की जनता का अभूतपूर्व समर्थन मिला। सन 1966 से ले कर 2011 तक 45 वर्षों में लोकपाल-लोकायुक्त विधेयक संसद में आठ बार पेश हुआ

2011 दिल्ली आन्दोलन जन सहभाग

सीमावर्ती क्षेत्र माना, चमोली में सभा

कैण्डल मार्च राळेगण सिद्धि

और पारित नहीं हो पाया था। 16 अगस्त 2011 को आन्दोलन शुरु हुआ, देश की जनता में जागृति का उफान आया और **26 अगस्त 2011 को संसद का विशेष अधिवेशन बुला कर** लोकपाल-लोकायुक्त कानून पास करवाने को सरकार बाध्य हुई। दिल्ली के रामलीला मैदान के इस आन्दोलन के कारण भ्रष्टाचार न भी मिट पाया हो, मगर करोडों रुपयों के व्यय करने के बावजूद जो लोक शिक्षा, लोक जागरण नहीं हो पाता था, वह इस आन्दोलन के कारण हो पाया। 2011 के इस आन्दोलन के पश्चात् भ्रष्टाचार विरोधी जन आन्दोलन में अवांछित तत्वों की घुसपैठ बढती गई। आन्दोलन बदनाम होने की नौबत आई। आनन फानन कार्रवाई कर आन्दोलन की राज्य भर की सभी समितियाँ बर्ख़ास्त की गईं। यह आन्दोलन चरित्र आधारित होना चाहिए। हमने हर जतन से चरित्र को सम्भाले रखा है।

सन 2011 के आन्दोलन में देश की जनता में जागृति की लहर आई थी। लग रहा था कि अब देश में सही माने में लोक तन्त्र बहाल होगा। क्यों कि स्वाधीनता के बाद

जगतसिंहपुर, ओडिशा

सीतापुर, उत्तर प्रदेश

झून्झनूं, राजस्थान

आग्रा, उत्तर प्रदेश

कोप्पल, कर्नाटक

चम्बा, उत्तराखंड

जनहितार्थ किए गए अनशन

अनु.	अनशन की वजह	स्थान	कब	कुल दिन
1	पाठशाला को मान्यता मिलने हेतु	अहमदनगर	जून 1980	1
2	ग्रामविकास कार्य में अफसरों के असहयोग के निषेध में	राळेगण सिद्धि	7-8 जून 1983	2
3	किसानों की समस्याएं	राळेगण सिद्धि	20-24 फरवरी 1989	5
4	खेती और बिजली समस्याएं	राळेगण सिद्धि	20-28 नवम्बर 1989	9
5	वनीकरण विभाग का भ्रष्टाचार	आळंदी, ज़ि.पुणे	01-06 मई 1994	6
6	शिवसेना-भाजपा गठबन्धन सरकार के भ्रष्टाचार की जाँच हेतु	राळेगण सिद्धि	20नवम्बर-03 दिसम्बर '96	12
7	शिवसेना-भाजपा गठबन्धन सरकार के भ्रष्ट मन्त्रियों की जाँच हेतु	राळेगण सिद्धि	10-19 मई 1997	10
8	शिवसेना-भाजपा गठबन्धन सरकार के भ्रष्टाचार के निषेध में	आळंदी, ज़ि. पुणे	09-18 अगस्त 1999	10
9	सूचना का अधिकार कानून की माँग में	आज़ाद मैदान, मुम्बई	09-17 अगस्त 2003	9
10	सूचना का अधिकार कानून पर अमल, ग्रामसभा का सबलीकरण, तबादलों का कानून, कार्यालयीन विलम्ब	राळेगण सिद्धि	09-18 फरवरी 2004	9
11	सूचना का अधिकार कानून में केन्द्र सरकार द्वारा संशोधन कर उसे कमज़ोर बनाने की कोशिश के खिलाफ	आळंदी, ज़ि. पुणे	09-19 अगस्त 2006	11
12	न्या. सावंत आयोग द्वारा दोषी करार दिए गए भ्रष्ट मन्त्रियों पर कार्रवाई की माँग में	राळेगण सिद्धि	25 दिसम्बर-03 जनवरी 2006	10
13	मिलीजुली सरकार के भ्रष्ट मन्त्रियों पर कार्रवाई की माँग में	राळेगण सिद्धि	02-10 अक्तूबर 2009	9
14	सहकारी पतसंस्था घोटालों में फँसी पूंजी लोगों को मिलने हेतु तथा नया सहकार कानून बनाने की माँग में	राळेगण सिद्धि	16-20 मार्च 2010	5
15	जन लोकपाल कानून मसौदा बनाने के लिए जनता के प्रतिनिधियों सहित संयुक्त समिति की माँग में	जंतर मंतर, दिल्ली	05-09 अप्रैल 2011	5
16	जन लोकपाल कानून बनाने के लिए ऐतिहासिक आन्दोलन	रामलीला मैदान, दिल्ली	16-28 अगस्त 2011	13
17	जन लोकपाल कानून पारित कराने के लिए	मुंबई	27-28 दिसम्बर 2011	2
18	सक्षम लोकपाल कानून के लिए ऐतिहासिक आन्दोलन	राळेगण सिद्धि	10-18 दिसम्बर 2013	9
19	किसानों की समस्याएं, लोकपाल-लोकायुक्त, चुनाव सुधार	रामलीला मैदान, दिल्ली	23-29 मार्च 2018	7
20	किसानों की समस्याएं, लोकपाल-लोकायुक्त, चुनाव सुधार	राळेगण सिद्धि	30 जन.-07 फरवरी 2019	7

अन्य राज्यों में यात्राएं

2013– जनतन्त्र यात्रा (चुनाव सुधार)			
अनु.	दिनांक	राज्य	जन सभा स्थान
1	30 मार्च 2013	पंजाब	अमृतसर
2	31 मार्च 2013	पंजाब	दुर्गयाना मन्दिर दर्शन, स्वर्ण मन्दिर, जलियाँवाला बाग़, कपूरथला, जलन्धर, रैया, बियास, सुब्हानपुर
3	1 अप्रैल 2013	पंजाब	फगवाडा, गोराया, फिललौर, जगराव, लुधियाणा, मोगा
4	2 अप्रैल 2013	पंजाब	तलवण्डी, फिरोज़पुर, कोटाकपुरा, फरीदकोट, भटिण्डा
5	3 अप्रैल 2013	पंजाब	रामपुरा, संगरूर, भावनिगड, बरनाला, पटियाला
6	4 अप्रैल 2013	पंजाब/हरयाणा	रामपुरा, महेशनगर, साहा, मुलाना, थाना छप्पर, रादौर, लद्या, पीपली, अम्बाला, यमुनानगर, कुरुक्षेत्र
7	5 अप्रैल 2013	हरयाणा	नीलोखेडी, ताओरी, घरमुण्डा, मथलोरा, सफैदों, पीलुखेडा, करनाला, पानपत, जिंद
8	6 अप्रैल 2013	हरयाणा	मिर्चपुरा, बडवाला, अगरोहा, फतेहाबाद, सिरसा
9	7 अप्रैल 2013	हरयाणा	नथुसरी, चोपटा, आदमपुरा, निओली कलाँ, हिसार, तोषाम, भिवानी
10	8 अप्रैल 2013	हरयाणा	चरखी दादरी, अखौदा, पाली, महेन्द्रगढ, नंगल सिरोहा, हुदिना, अटेली, कुण्ड, नारनौल, रेवाडी
11	9 अप्रैल 2013	हरयाणा	धारुहेडा, ताउरू, नू, सोहना, भिवानी, गुडगाँव
12	10 अप्रैल 2013	हरयाणा	फारुक़ नगर, गोहाना, झज्जर, राहतक, सोनीपत
13	11 अप्रैल 2013	हरयाणा	बाग़पत, लोनी, सूर्यनगर, इंदरापुरम, गाज़ियाबाद, नोएडा
14	12 अप्रैल 2013	उत्तर प्रदेश	ग्रेटर नोएडा, भंगेल, धूम दादरी, धौलाना, ककराना, पिलखुया, बझेरा, हापुड
15	13 अप्रैल 2013	उत्तर प्रदेश	गुलौटी, दशहरा, खुर्जा, जेवर, जटयारी, गोमत की प्याऊ, खैर, बुलन्द शहर, अलीगढ

2013 – जनतन्त्र यात्रा (चुनाव सुधार)			
अनु.	दिनांक	राज्य	जन सभा स्थान
16	14 अप्रैल 2013	उत्तर प्रदे	एएमयू, अनूपशहर, गवाँ, सम्बल, हसनपुरा, गजरौला, व्रजघाट, गढ
17	15 अप्रैल 2013	उत्तर प्रदेश	बारा, भंगेला, खतौली, देवबन्द, बडगाँव, मेरठ, मुज़फ्फरनगर, सहारनपुर
18	16 अप्रैल 2013	उत्तराखण्ड	रूडकी, खुटमलपुर, मोहन्द, ऋषिकेश, देहरादून
19	17 अप्रैल 2013	उत्तराखण्ड	हरिद्वार
20	5 जुलाई 2013	मध्य प्रदेश	रेवा
21	6 जुलाई 2013	मध्य प्रदेश	रामपुर, चुरहत, सिद्धी
22	7 जुलाई 2013	मध्य प्रदेश	बेवहारी, कटनी
23	8 जुलाई 2013	मध्य प्रदेश	जबलपुर, सिवनी
24	9 जुलाई 2013	मध्य प्रदेश	छिन्दवाडा, मुलताई, बैतुल
25	10 जुलाई 2013	मध्य प्रदेश	इटारसी, होशंगाबाद
26	11 जुलाई 2013	मध्य प्रदेश	भोपाल
27	12 जुलाई 2013	मध्य प्रदेश	विदिशा, सागर
28	13 जुलाई 2013	मध्य प्रदेश	शाहगढ, धुबरा, टीकमगढ
29	14 जुलाई 2013	मध्य प्रदेश	दंतिया, ग्वालियर
30	15 जुलाई 2013	मध्य प्रदेश	शिवपुरी, गुना
31	16 जुलाई 2013	मध्य प्रदेश	बेईवारा, सर्जेपुर
32	17 जुलाई 2013	मध्य प्रदेश	उज्जैन, देवास, इन्दौर
33	21 जुलाई 2013	उत्तर प्रदेश	मुरादाबाद
34	22 जुलाई 2013	उत्तर प्रदेश	रामपुर, बरैली
35	23 जुलाई 2013	उत्तर प्रदेश	बदायून, फारूक़ाबाद
36	24 जुलाई 2013	उत्तर प्रदेश	जहाँजहाँपुर, सीतापुर
37	25 जुलाई 2013	उत्तर प्रदेश	बहराइच, गोण्डा
38	26 जुलाई 2013	उत्तर प्रदेश	फैज़ाबाद, सुलतानपुर
39	27 जुलाई 2013	उत्तर प्रदेश	प्रतापगढ, इलाहाबाद

2013 – जनतन्त्र यात्रा (चुनाव सुधार)			
अनु.	दिनांक	राज्य	जन सभा स्थान
40	28 जुलाई 2013	उत्तर प्रदेश	बादशाहपुर, बदलापुर, जौनपुर
41	29 जुलाई 2013	उत्तर प्रदेश	वाराणसी
42	30 जुलाई 2013	उत्तर प्रदेश	वाराणसी
43	31 जुलाई 2013	उत्तर प्रदेश	वाराणसी
44	1 अगस्त 2013	उत्तर प्रदेश	आज़मगढ
45	2 अगस्त 2013	उत्तर प्रदेश	मऊ, ग़ाज़ीपुर
46	3 अगस्त 2013	उत्तर प्रदेश	बक्सर घाट, बलिया

दलगत राजनीति लोक तन्त्र पर हावी हो गई। राज तन्त्र वही रहा, फ़र्क़ रहा तो सिर्फ़ गोरे और काले का। जनता की जागृति से लोक तन्त्र की उम्मीद फिर बन गई। 'टीम अण्णा' पर लोगों का भरोसा हो चला था। अब यह 'टीम अण्णा' पूरे देश में भ्रमण कर दल-विरहित लोक तन्त्र के निर्माण के लिए लोक शिक्षा, लोक जागरण करेगी, मज़बूत लोक तन्त्र की, सच्ची आज़ादी की नई सुबह आएगी ऐसा लग रहा था। पर टीम के कुछ लोगों ने अलग रास्ता अख़्तियार किया, लोक तन्त्र के आने के आसार ज़रूर थे, लेकिन वह सपना बिखर गया।

आन्दोलन की जागृति से कुछ उम्मीदें बन्ध गई थीं। देश भर में भ्रमण करने के लिए आवश्यक धन मेरे पास नहीं था। न मैं कहीं जा पाया, न ही मार्गदर्शन पूछने वाले आए। दूसरी आज़ादी और नये लोक तन्त्र का सपना अधूरा ही रह गया। अण्णा हज़ारे तो फ़क़ीर है। लेकिन देश की जनता एक अच्छे मौक़े का फ़ायदा उठाने से चूक गई। सन 1857 से ले कर 1947 तक नब्बे साल के स्वाधीनता संग्राम के दौरान जिन्होंने अपनी क़ुर्बानियाँ दीं, उनका सपना था देश में से अंग्रेज़ों को खदेडना और देश में लोगों का, लोगों ने, लोक सहभागिता से चलाया लोक-तन्त्र बहाल करना। अंग्रेज़ तो चले गए, पर लोगों का लोक-तन्त्र नहीं पनपा। दलों की राजनीति लोक-तन्त्र को निगल गई। लोक-तन्त्र के बदले दलों का, दलों द्वारा, दलों की सहभागिता से चलाया गया दल-तन्त्र आया। मैंने फिर भी उम्मीद नहीं हारी है। मेरी कोशिश है कि चरित्रवान् लोगों का दलविरहित संगठन देश में बनाया जाए। स्वाधीनता का मतलब मनमानी करने की आज़ादी समझने वाले राजनीतिक दलों पर क्या इस संगठन द्वारा जन शक्ति का दबाव हम बना सकते हैं? यही एक मात्र विकल्प दिख रहा है। बिना धन-सम्पत्ति, सत्ता के मुझ जैसे संन्यस्त फ़क़ीरी

23 मार्च 2018, रामलीला मैदान पर हुए दूसरे आन्दोलन की पूर्व तैयारी में हुई यात्राएं			
अनु.	**दिनांक**	**राज्य**	**जन सभा स्थान**
1	22 नवम्बर 2017	ओडिशा	जगतसिंगपुर
2	27 नवम्बर 2017	महाराष्ट्र	औरंगाबाद
3	2 दिसम्बर 2017	मध्य प्रदेश	खजुराहो
4	10 दिसम्बर 2017	तामिल नाडू	मदुराई
5	12 दिसम्बर 2017	उत्तर प्रदेश	आगरा
6	13 दिसम्बर 2017	उत्तर प्रदेश	औरंगाबाद (बुलन्दशहर)
7	14 दिसम्बर 2017	असम	गुवाहाटी (प्रेस)
8	16 दिसम्बर 2017	अरुणाचल प्रदेश	इटानगर
9	23 दिसम्बर 2017	राजस्थान	परबतसर
10	24 दिसम्बर 2017	उत्तर प्रदेश	सम्भल
11	02 जनवरी 2018	कर्नाटक	धारवाड
12	03 जनवरी 2018	कर्नाटक	कोप्पल
13	04 जनवरी 2018	कर्नाटक	हुबळी
14	05 जनवरी 2018	कर्नाटक	बेळगांव
15	12 जनवरी 2018	महाराष्ट्र	पाथर्डी
16	15 जनवरी 2018	दिल्ली	दिल्ली
17	19 जनवरी 2018	महाराष्ट्र	कोरेगांव/ सातारा
18	20 जनवरी 2018	महाराष्ट्र	आटपाडी
19	28 जनवरी 2018	कर्नाटक	गुलबर्गा
20	30 जनवरी 2018	कर्नाटक	ब्याडगी
21	31 जनवरी 2018	कर्नाटक	बेंगलूरू
22	04 फरवरी 2018	हरयाणा	फरीदाबाद
23	05 फरवरी 2018	दिल्ली	दिल्ली
24	07 फरवरी 2018	मध्य प्रदेश	सतना
25	09 फरवरी 2018	राजस्थान	झूंझनूं
26	11 फरवरी 2018	उत्तर प्रदेश	दादरी (नोएडा)
27	13 फरवरी 2018	हरयाणा	बहादुरगढ
28	14 फरवरी 2018	उत्तराखण्ड	गढवाल

23 मार्च 2018, रामलीला मैदान पर हुए दूसरे आन्दोलन की पूर्व तैयारी में हुई यात्राएं			
अनु.	**दिनांक**	**राज्य**	**जन सभा स्थान**
29	15 फरवरी 2018	उत्तराखण्ड	चम्बा, टिहरी
30	18 फरवरी 2018	हरयाणा	भिवानी
31	20 फरवरी 2018	महाराष्ट्र	इंदापूर
32	23 फरवरी 2018	राजस्थान	कोटा
33	24 फरवरी 2018	राजस्थान	चौमु, जयपुर
34	25 फरवरी 2018	उत्तर प्रदेश	लखनऊ
35	26 फरवरी 2018	उत्तर प्रदेश	लखनऊ
36	27 फरवरी 2018	उत्तर प्रदेश	सीतापुर, लखनऊ
37	04 मार्च 2018	हरयाणा	कुरुक्षेत्र
38	05 मार्च 2018	उत्तराखण्ड	हल्दवानी
39	07 मार्च 2018	जम्मू कश्मीर	जम्मू
40	11 मार्च 2018	महाराष्ट्र	उरुळी देवाची
41	17 मार्च 2018	बिहार	खगरिया

जीवन जीने वाले साधारण कार्यकर्ता के द्वारा ईश्वर ने जो भी कुछ काम करवा लिया, वह अन्य कार्यकर्ताओं को दीपस्तम्भ जैसा पथ-प्रदर्शक बन सकता है। सत्ता पक्ष हो या विपक्ष, देश की स्वतन्त्रता का मतलब मनमानी की आज़ादी लगाने वाले लोगों पर जन-शक्ति का अंकुश ही कारगर विकल्प हो सकेगा।

ख़ुदी- स्वाभिमान का महत्व

उम्र के 25 वें साल में इक नौजवान जीवन का लक्ष्य यदि निर्धारित करें, मृत्यु के डर को हटा दें, और अथक परिश्रम करते हुए यदि स्वाभिमान से जीना ठान लें तो वह नवयुवक समाज, गाँव व देश के लिए क्या कुछ नहीं कर सकता? कुछ युवक समाज के लिए अच्छा काम करते हैं, चरित्र को भी सम्भालते हैं। मगर उनका लक्ष्य अल्प कालीन होता है और 'मैं-मेरा...' तक ही सीमित रहता है। कुछ युवक ऐसे भी हैं जिनके जीवन में कोई लक्ष्य ही नहीं है। बस खाओ, पीओ, ऐश करो और एक दिन मर जाओ यही उनकी कहानी होती है। जीवन का मतलब खाना-पीना और मरना इतना ही अगर है तो जानवर और हम इन्सान में फ़र्क़ ही क्या रहा? ऐसी पशुतुल्य जीवनी भी कोई जीवनी है? कुछ युवक स्वाभिमान के साथ जीवन जीते हैं लेकिन विना स्वाभिमान के लाचार जीवनी जीने

वाले कुछ युवाओं को देखता हूं तो दुख होता है। ऐसे वैसों की साहब-साहब, जी-हज़ूरी, लाचारी वे करते हैं, केवल इसी लिए कि अपनी योग्यता को ही उन्होंने ख़ुद नहीं पहचाना है।

पिंजडे के तोते को बाहर निकालें भी तो उँची उडान भर सकता हैं। उसे लगता है कि जिस डण्डी पे वह बैठा है वह अगर घूम जाए तो नीचे माथा- ऊपर पाँव हो कर वह गिर पडेगा। इसी डर के मारे उस डण्डी को वह और भी कस कर पकडे रहता है। वह यह भूल चुका है कि अगर डण्डी को छोड दे तो लम्बी उडान वह भर सकता है। यही हालत बहुतांश युवाओं की है। ख़ुद में क़ाबिलियत होने के बावजूद भी किसी के मातहत हो कर लाचारी जी-हज़ूरी की ज़िन्दगी जीते हैं। मेरे पास धन-दौलत, सत्ता नहीं है मगर किसी के आगे लाचार होना मुझे कभी गवारा नहीं हुआ। ख़ुदी को बुलन्द किया, स्वाभिमान से जिया, तभी तो जो कुछ मुझसे बन पडा, मैं समाज के लिए कुछ कर पाया।

राळेगण सिद्धि गाँव की विकास गाथा की अधिक जानकारी हेतु पढिये :

'मेरा गाँव, मेरा तीर्थ'

भ्रष्टाचार विरोधी जन आंदोलन न्यास

मु. पो. राळेगणसिद्धी,
ता. पारनेर,
जि. अहमदनगर 414302

☎ 91-02488-240401
annahazareoffice@gmail.com

हिंद स्वराज ट्रस्ट

पाणलोट विकास व
ग्रामविकास मार्गदर्शन केंद्र
मु. पो. राळेगणसिद्धी,
ता. पारनेर, जि. अहमदनगर 414302
☎ 91-02488-240227
hstralegan@gmail.com

Facebook Page: www.facebook.com/KBAnnaHazare

www.annahazare.org

● प्रकाशकः स्वामी विवेकानंद कृतज्ञता निधी, राळेगण सिद्धी ● देणगी मूल्य : ₹ 10/-